(b) whether it is a fact that instead of retiring him he has been appointed as a Director; and

(c) if so, what are the reasons therefor?

THE PRIME MINISTER AND MINISTER OF ATOMIC ENERGY (SHRIMATI INDIRA GANDHI) : (a) Dr. D. N. Wadia, F. R. S., to whom the Hon. Member presumably refers, retired from Government service in January 1949. He is at present a National Professor and Honorary Geological Adviser to the Government of India. The question of his retirement from service does not, therefore, arise.

(b) No, Sir.

(c) Does not arise.

†Shifting of the Information Department of Indian Embassy in Washington

809. SHRI RAJNARAIN : Will the PRIME MINISTER be pleased to state :

(a) whether it is a fact that the Information Department of the Indian Embassy at Washington is being transferred from the Chancery building to some other place;

(b) whether it is a fact that this has caused discontent among the employees of the Embassy; and

(c) if so, with what view and for what reason this transfer is being effected.

THE PRIME MINISTER AND MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRIMATI INDIRA GANDHI) : (a) Yes, Sir. The Information Service of India, Washington, shifted to the 9th floor of the National Press Building, 14 and F Street, N. W. Washington D. C. with effect from 12th August, 1967.

(b) No, Sir.

(c) Does not arise.

---

12 NOON

REFERENCE TO QUESTIONS ADDRESSED TO THE PRIME MINISTER

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal) : Sir, I have a little submission to make. All along, Sir, the Prime Minister has been present in this House. You know, many questions have been addressed to her, but not a single question the Prime Minister has answered. Now, the position is this. You may say, the other Ministers help. Is it the function of a Minister-in-charge only to carry out superintendence of answering our questions by the Junior Ministers? Or is it not the function of the Minister also to participate in answering questions when the Minister-in-charge is present in the House?

MR. CHAIRMAN : That depends upon the importance of the question.

SHRI BHUPESH GUPTA : You have admitted her importance. I am not making it a big point. But clearly, in parliamentary practice, Sir, this is done. I can understand when the Prime Minister is absent and her not answering any question. But when she is present, then it is courtesy to the House also that she gets up and answers questions. It is not that any more light would have been thrown. I think she can take our guidance in this matter.

ENQUIRIES RE CALLING ATTENTION NOTICES

Agitation against the Official Languages (Amendment Bill, 1967

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : मै आपसे अदब के साथ रिक्वेस्ट कर रहा हूं कि 5 दिन हो गए हमें कालिंग अटेंशन दिए। जो लेंग्वेज अमेंडमेंट बिल है उसके विरोध में इस देश में एक उग्र वातावरण पैदा हुआ है। सारे बिहार, सारे उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में अग्नि भड़क रही है।

श्री अवधेश्वर प्रसाद सिंह (बिहार) : बिहार मे नहीं है।

श्री राजनारायण : मै उनसे ज्यादा बिहार को जानता हूं। श्रीमन, मैं आपसे साफ कहना चाहता हूं कि हिन्दी से ज़्यादा मुहब्बत मुझे तमिल से है, हिन्दी से ज्यादा मुहब्बत बंगला से है, हिन्दी से ज्यादा मुहब्बत तेलगु से है और राष्ट्र की जितनी भाषाएं है, उड़िया वगैरह, उनसे है क्योंकि भारतमाता की

---

†Original notice of the question was received in Hindi but it could not be supplied to the Ministry because of unavoidable circumstances.

ये सब सन्ताने है । हिन्दी बडी बहिन है और राष्ट्र की अन्य भाषाएं छोटी बहिने हैं बडी बहिन मस्त होती है, नाचती है, थिरकती है जब वह अपनी छोटी बहिनो को थिरकते हुए पाती है । हिन्दी प्रसन्न होगी तब जब राष्ट्र की दूसरी सभी भाषाए खिलेगी, तरक्की पर जाएगी । अंग्रेजी आज सभी भाषाओ की तरक्की को रोके हुए है और 1965 के बाद भी अंग्रेजी को चालू रखने का विधेयक लोक सभा में आया हुआ है । मै कल वाराणसी में था, करीब 25-30 हजार विद्यार्थी और नागरिकों ने 144 धारा तोड कर इस असंवैधानिक धारा की धज्जिया उडाई । जहां जहा हम जाते थे, दूकानदार अपना अंग्रेजी का साइनबोर्ड उतार लेते थे । रात को सभा हुई, कोई दुर्घटना नही हुई । आज दिल्ली विश्वविद्यालय को देखे । दिल्ली विश्वविद्यालय मे कल अच्छी तरह से हडताल थी । बिहार ने अल्टीमेटम दे रखा है कि अगर अंग्रेजी नही हटी और लोक सभा से यह अलोकतंत्रीय वाला विधेयक वापस नही लिया गया तो 5 तारीख मे सारे बिहार मे विद्रोह की अग्नि प्रज्वलित होगी । हम जनता के प्रतिनिधि है ।

DIWAN CHAMAN LALL (Punjab) : What is the point of order?

श्री राजनारायण : हमने पाइन्ट आफ आर्डर नही उठाया, हम देश के एक महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर सदन का ध्यान खीच रहे है, देश का ध्यान खीच रहे है। हमारा पाइन्ट यह है कि आपने खुद इस सदन मे कहा कि सरकार तमाम जानकारी हासिल कर रही है और इस सदन को अवगत कराएगी। बार-बार हमारे कालिग अटेंशन करने के भी सरकार आख-मिचौनी कर रही है । मुझे खुशी है कि आज जब मै अपने इन जज्बात का इजहार कर रहा हू तो प्रधान मत्री यहा पर विराजमान है, यह अच्छी बात है । प्रधान मत्री जी उत्तर प्रदेश से आती है रायबरेली से आती है।

MR. CHAIRMAN : I would like to explain. That matter you refer to, I have referred it to the Education Minister. He said that he would make a statement about the Banaras affair. I have done my part and he will do his part.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, आप देखे, यह सवाल शिक्षा मंत्री से सम्बन्धित नही रह गया है क्योकि घर मंत्री और प्रधान मत्री बजिद हैं कि अंग्रेजी कायम रखने का यह विधेयक बराबर आए । जो अंग्रेजी रखना चाहते है उनको अंग्रेजी रखने दी जाय, हमे इसमें कोई एतराज नही है, मगर जो अंग्रेजी नही रखना चाहते है उनके ऊपर तो वह न लादी जाय । कई राज्यो ने अंग्रेजी के विरोध मे प्रस्ताव पास कर दिया, उत्तर प्रदेश की सरकार ने स्पष्ट शब्दो मे कहा है कि इस विधेयक के हम विरोधी है यह विधेयक नही आना चाहिए, बिहार की सरकार ने कहा कि हम इस विधेयक के विरोधी है, यह विधेयक नही आना चाहिए । बार-बार हमारी प्रधान मत्री जी पार्लियामेट के मुह को बन्द करने की धमकी देती है । आज यह सदन जनभावनाओ का प्रतिबिम्ब न हो, जनता की भावनाएं यहा परिलक्षित न हो, प्रतिबिम्बित न हो तो यह राज्य सभा अपने कर्तव्य का पालन नही करेगी । इस लिए मै आपसे निवेदन करना चाहता हू कि सभी कार्य बन्द करके इस पर बहस होनी चाहिए और सदन का प्रस्ताव होना चाहिए । मै आपसे निवेदन करूगा कि आप हमारा प्रस्ताव ले, आज पाचवे दिन मै इस प्रस्ताव को रख रहा हू कि यह सदन सरकार से आग्रह करता है कि लोक सभा मे विचारार्थ जा.. अंग्रेजी, गलाघोटू, देश के लिए गुलामी का चिन्ह विधेयक आ रहा है उसको वापस ले ले और अगर आप इस पर पहले बहस न करा कर दूसरे जरूरी कामो को इस सदन मे रखने का अनुमति देगे तो मै अदब के साथ कहना चाहता हू कि मै आपके आदेश का विरोध करूगा । प्रधान मंत्री विद्यमान है, आप सारे कामो को रोके ।

DIWAN CHAMAN LALL : Under what rule or order is he speaking?

श्री राजनारायण : एक बात है। श्री के० के० शाह, विराजमान हैं, श्री के० के० शाह, रेडियो के मालिक, चाहें तो झूठी खबर फैला देते हैं। श्रीमान, मैंने वाराणसी से फोन किया, के० के० शाह जी डिनर पर गए थे, मंत्रियों को रोज डिनर देने वाले भी मिल जाते हैं। मैंने उनके पी० ए० को कहा कि यह झूठी खबर है कि वाराणसी का आन्दोलन सस्पेन्डेड है, वहां के लोगों ने विरोध किया, विद्यार्थियों ने विरोध किया, के० के० शाह का पुतला जलाया गया। उनका रेडियो झूठा है। हमने के० के० शाह को उनकी गलती बताई, मगर उनके रेडियो ने अपनी गलती को स्पष्ट नहीं किया।

सूचना तथा प्रसारण मंत्री (श्री के० के० शाह) : किया है।

श्री निरंजन वर्मा : (मध्य प्रदेश) : इस पर बहस होनी चाहिए, बहुत महत्वपूर्ण विषय है।

SHRI M. M. DHARIA (Maharashtra) : Sir, on a point of order. Mr. Chairman, I am aware that this has been the practice of this House. If a Calling Attention Notice is given and if the hon. Member meets you in the Chamber and he is allowed to speak here, he makes an introductory remark on the Calling Attention Notice just to draw the attention of the House to it. I do not know whether Mr. Rajnarain was allowed to do so today. If this facility is given to Mr. Rajnarain, why are we, who are also hon. Members of this House, being denied this facility? He is making a speech ... (*Interruptions*) Let me have my say.

श्री राजनारायण : हमसे ज्यादा फेसिलिटी इनको दीजिए।

MR. CHAIRMAN : There was a Calling Attention Notice given by Shri Rajnarain one day earlier ...

SHRI RAJNARAIN : Not a day, but four or five days ago.

MR. CHAIRMAN : About four or five days ago. I sent it on to the Education Minister. The Education Minister stated that he was collecting the information and that he would certainly come to the House and attend to that Calling Attetnion Notice. Therefore, I can assure Shri Rajnarain that it will be done during the course of tomorrow or the day after.

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal) : What about my Calling Attention Notice?

श्री राजनारायण : मैं निहायत अदब के साथ आज आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि मेरा प्रस्ताव है कि इस सदन के सभी नियमों को आज सस्पेंड किया जाय, इस सदन में इस पर बहस हो और इस सदन की भावना इस सरकार के पास भेजी जाय कि लोक सभा में जो कल से काला विधेयक प्रस्तुत होने जा रहा है वह वापस हो।

MR. CHAIRMAN : No, no.

श्री राजनारायण : मेरा यह प्रस्ताव है और इस प्रस्ताव पर चर्चा होनी चाहिये।

MR. CHAIRMAN : The Education Minister is prepared to make a statement.

श्री राजनारायण : आज पता नहीं बिहार में क्या हो जायेगा, आज पता नहीं वह क्रोधाग्नि को कहां तक भड़का देगा, इसलिये बहस आज होनी चाहिये, इसकी आवश्यकता आज है।

MR. CHAIRMAN : Sit down. Mr. Bhupesh Gupta.

SHRI BHUPESH GUPTA : My calling attention is...

SHRI A. M. TARIQ (Jammu and Kashmir) : Mr. Chairman, Sir...

SHRI BHUPESH GUPTA : You sit down. He has called me...

श्री राजनारायण : श्रीमन्, भूपेश जी से मैं आपके द्वारा निवेदन करता हूं।

SHRI BHUPESH GUPTA : Let me finish.

MR. CHAIRMAN : Mr. Rajnarain, Please sit down.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, आपके ज़रिये क्या मैं भूपेश जी से प्रार्थना कर सकता हूं कि मैंने खत्म नहीं किया है।

MR. CHAIRMAN : Sit down.

श्री राजनारायण : यह फिनिश तब होगा जब मैं खुद फिनिश हो जाऊंगा। मैं आपसे अनुनय विनय कर रहा हूं, पहले आप इस प्रस्ताव पर बहस कराइये, हमारे इस प्रस्ताव पर बहस कराइये।

MR. CHAIRMAN : Sit down, Mr. Rajnarain.

श्री राजनारायण : मैं बैठने के लिये तैयार नहीं हूं। आप खड़े हैं हम बैठे जाते हैं, आप बैठेंगे हम खड़े होंगे।

MR. CHAIRMAN : When I told you to sit down please sit down. I have given you an answer about the Calling Attention Notice that you have given. The Education Minister is going to attend to it tomorrow or the day after. Nothing more can be done.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, मैं आपसे कहना चाहता हूं कि हमको उनके स्टेटमेंट की जरूरत नहीं है, आवश्यकता नहीं है। हमारी आवश्यकता यह है कि हमारे प्रस्ताव पर पहले बहस हो, दूसरे नियमों का भंग किया जाय। हमारा प्रस्ताव है कि इस सदन की राय में लोक सभा के सामने प्रस्तुत भाषा संशोधन विधेयक वापस लिया जाय। इस प्रस्ताव पर पहले बहस हो क्योंकि आज सारे देश में आग लग जायगी।

ALLEGED SHOW OF POLICE FORCE AT THE PALAM AIRPORT

SHRI BHUPESH GUPTA : He is making a suggestion. Let him think over it for ten minutes. Meanwhile let me read it out.

"The show of police force at the Palam Air port today and threats against black flag demonstrators who assembled there to voice people's protest against traitor P. C. Ghosh on his arrival in the capital to further conspire with leaders of the Central Government."

Sir, this is a subject which relates to the Central Government. The incident occurred today and is of public importance. It is addressed to the Prime Minister. The Central Government should make a statement.

Sir, when these people went to the airport, they were subjected to a show of police force. They were not allowed to go to the gallery. Many things happened there. Nobody had been arrested I concede. Sir, it is the inherent right of the citizens of Delhi or any section of it to go and demonstrate in a peaceful manner without violating law. As they did not violate the law, what was the need for mobilisation of such a police force? They have come here for conspiratorial ends. But it is also our inherent right, the right of the people to go there and demonstrate. Mr. Atulya Ghosh has come. They are being protected by the police. Mr. P. C. Chunder, the President, has come. Another chap, a turn-coat always in his life, Mr. Shiv Dutt Roy, has come. They are being given protection in this manner. I should like to have a statement whether we have a right under our system to demonstrate when certain demands have to be voiced, when a certain protest has to be raised. It is a very serious matter. Not only that, the police truck was taken to protect Mr. Atulya Ghosh. In what capacity has he come? Why Mr. Atulya Ghosh is being protected in this manner?

MR. CHAIRMAN : You have mentioned this.

SHRI BHUPESH GUPTA : I am thinking about that also. The Prime Minister is the head of the Government. I should like to know. Palam Airport is not the property of Mr. Atulya Ghosh.

MR. CHAIRMAN : The Palam Airport matter is over.

SHRI BHUPESH GUPTA : They did not go to the gallery even. All these things should be explained. If we cannot even demonstrate against such things, what is the use of fundamental rights?

AGITATION AGAINST THE OFFICIAL LANGUAGES (AMENDMENT) BILL, 1967—*Continued*

श्री राजनारायण : श्रीमन्, मेरे प्रस्ताव के सम्बन्ध में पहले चर्चा होनी चाहिये।

MR. CHAIRMAN . Sit down

SHRI A. G KULKARNI (Maharashtra) : Sir, on a point of order.

(*Some hon. Members stood up in their seats*)

MR. CHAIRMAN . All of you sit down.

श्री राजनारायण श्रीमन्, देखिये, मैं बहुत विनम्रता के साथ कह देना चाहता हू कि यह हमारा प्रस्ताव है कि इस सदन की राय है कि लोक सभा के सामने प्रस्तुत भाषा सशोधन विधेयक वापस लिया जाय। इस सवाल को ले कर आज महात्मा गाधी और महामना मालवीय जी की आत्मा चीत्कार कर रही है। यह सरकार क्या कर रही है। आप, श्रीमन्, गवर्नर रह चुके हैं, राजस्थान के श्री सम्पूर्णानन्द गवर्नर रह चुके हैं, सम्पूर्णानन्द जी ने जो बयान दिया है उसको जरा देखे, सम्पूर्णानन्द जी ने कहा है कि राज्य सभा और लोक सभा के सदस्य आतकित न हो, इस तरह का विधेयक जारी नही किया जा सकता, यह भाषा का सवाल कोई सास्कृतिक प्रश्न ही नही है, यह जीविका का सवाल है, मुल्क की तरक्कि का सवाल है, देश के विकास का सवाल है, सीमा की सुरक्षा का सवाल है, जनता की उन्नति का सवाल है, देश का सवाल है। क्या हम आग्रेजी भाषा मे भाषण करे। इसलिये मै आपसे निवेदन करना चाहता हू कि सर्व-प्रथम आप इसको स्थान दे, इस पर आज दिन भर बहस हो।

MR. CHAIRMAN You have expressed yourself. Now sit down

SHRI NIREN GHOSH (West Bengal) Through you, Sir, I have a submission to make May I know whether Mr Rajnarain is prepared to accept all the 14 languages as the official languages of India ?

श्री राजनारायण : हम एक्सेप्ट करते है। अग्रेजी हटा दी जाय, सभी भाषाओं को जो राष्ट्रीय भाषायें है उनको स्थान दिया जाय। पहले अग्रेजी हटे। वह देशद्रोही भाषा है, मुल्क को कलकित करने वाली भाषा है मुल्क के लिये गुलामी की भाषा है। अग्रेजी मे आप हमे कहते है कि हम बैठ जाय। मै आपकी इज्जत करता हू, आप खडे है इसलिये बैठ जाता हू।

MR CHAIRMAN You give a motion.

श्री राजनारायण : मोशन क्या दे। इससे अच्छा पार्लियामेटरी तरीका दुनिया मे और कोई नही है। आज घर मे आग लगी है। राजेन्द्र बाबू की एक बात बता रहा हू। उन्होने कहा था कि जब हमारे यहा बाढ आई हो और सोशलिस्ट लोग फावडा ले कर बाध बना रहे हो तो वहा लीगल क्विबलिंग्स और टैकनैकैलिटी मे नही जाना है, हम समाजवादीयो की सहायता करे। आज हमारा देश जल रहा है। एक कलकित भाषा को हमारे देश पर लादने की साजिश हो तो क्या हो। यह एक साजिश साम्राज्यवादियो की है, यह मै भूपेश गुप्ता जी से कहना चाहता हू। यह साजिश पूजी-पतियो की है। हम रूस गये, मास्को गये। श्रीमन् मास्को मे हमारे दूतावास पर अग्रेजी मे साइनबोर्ड लगा था। लानत है इस सरकार पर, शर्म आती है इस सरकार पर।

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal) : Sir, I want the problem to be solved in a proper way It is a very vital question and we all stand for Hindi being the official link language of the Indian Union But we would not like any section of the people to hustle us into taking any decision Therefore, there should be a discussion. There should be a debate on Mr Rajnarain's motion Speaking for myself, this House should not be hustled

MR. CHAIRMAN Sit down I shall not allow any further discussion about it If you want you can give a motion

SHRI RAJNARAIN I have accepted the suggestion of Mr. Bhupesh Gupta. मुल्क की जितनी भाषाये है उनको सब को आप बनाइये उसमे कोई एतराज नही

है, केवल अंग्रेजी हटे, यहां से पहले अंग्रेजी हटे, अंग्रेजी हटे, अंग्रेजी हटे, बंगाली को बना दे आफिशियल लैंगुएज, तामिल को बना दे आफिसियल लैंगुएज, हमको कोई एतराज नहीं है। अंग्रेजी हटे।

SHRI BHUPESH GUPTA : I stand for Hindi being the link language. I want the transition from English to the mother-tongue in every State to take place in a manner which is acceptable to all. If our case is strong. . .

(*Interruption*)

MR. CHAIRMAN : Sit down.

श्री राजनारायण : श्रीमन् अदब के के साथ मुझे आपके इस आदेश का उल्लंघन करना है, देश-हित में, जन-हित में। राष्ट्र-पिता गांधी के नाम पर, महामना मालवीय जी के नाम पर, देश की गरीबी, बेकारी को मिटाने के नाम पर, हमें विनम्रता के साथ ही आपके इस आदेश का उल्लंघन करना है, एक मिनट के लिये भी अंग्रेजी बर्दाश्त नहीं होगी। हमारे प्रोफेसर्स मारे जा रहे हैं . . .

MR. CHAIRMAN : Sit down. I understand the Education Minister is going to make a statement just now. . .

श्री राजनारायण : कोई आवश्यकता नहीं। प्रस्ताव पर बहस हो। हमारा तो यह है कि अंग्रेजी हटे और राष्ट्र की जितनी भाषायें हैं वे अपनी जगह ले लें, इसमें हमारा कोई एतराज नहीं है। लार्ड मेकाले के बोये ज़हर को हम अब चलने नहीं देंगे।

THE LEADER OF THE HOUSE (SHRI JAISUKHLAL HATHI) : May I say a word? Rajnarainji has raised several questions. But I think we should realise that we have a certain set of rules and procedures prescribed for the conduct of the House. If any matter has to be raised it can be raised at the proper time, after due notice to the Chair, with the permission of the Chair and at the relevant time. There is nothing on the Order Paper. For example, if Mr. Bhupesh Gupta wanted to mention about a Calling Attention Motion, with the Chair's permission he could do it. Similarly Rajnarainji wanted some statement on Banaras and the Education Minister was prepared to make a statement. But from that Rajnarainji went to another item and then to a third item. I think we should all try to co-operate with the Chair in maintaining the dignity and the decorum of the House and not raise questions at any time we like relevantly or irrelevantly. There will be an opportunity when the Official Language Bill comes and certainly we can all discuss it. Or Rajnarainji can give a motion and if the Chair admits it, then it is a different matter. But it is not really in the interests of the House or in the interests of the dignity and the decorum of the House that a senior Member like Rajnarainji should get up every now and then and take up this matter when it is not on the Order Paper, when it is not before the House. I, therefore, request him to cooperate with the House. Let us not take up a matter which is not at all before the House now.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, मैं एक जवाब देना चाहता हूं . . .

MR. CHAIRMAN : I shall not allow any more.

श्री राजनारायण : मैं आपके ज़रिये नेता सदन से एक निवेदन करना चाहता हूं। हमारी बात को सुनें नेता सदन। मैं नेता सदन की भावनाओं की कद्र करता हूं, मैं व्यक्तिगत तरीके से उनकी बहुत इज्जत करता हूं, मगर क्या नेता सदन चाहते हैं कि यह सदन, राज्य सभा "आगेस्ट हाऊस" आदरणीय सदन, केवल एक कार्टून शाप बने? हम इस राज्य सभा को कार्टून शाप नहीं बनाना चाहते हैं। क्या हमारे माननीय नेता सदन यह चाहते हैं कि राष्ट्र की, जनता की, सच्ची भावनाएं यहां प्रतिबिम्बित नहीं हों? इससे बढ़कर असंसदीय तरीका क्या है? तो मैं उनको अपील करता हूं। (*Interruptions*) हमारी बात सुन ली जाय। कई दिन तक हमने इंतजार किया कालिंग अटेन्शन के ज़रिये, मगर जब दो दिन उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान और मध्य प्रदेश के लोगों की भावनाओं को देखा, वहां की जनता ने फैसला किया, कल प्रस्ताव पास करके कि आप अगर,

[श्री राजनारायण]

हमारी भावनाओं की कद्र नहीं करोगे राज्य सभा लोक सभा में, तो इस्तीफा दे दो। तो आप हमको निकालो या आज हमारे प्रस्ताव को मान करके आज ही उसमें बहस करवाओ। आज इस पर बहस होनी चाहिये और प्रस्ताव होना चाहिये कि आदरणीय लोक सभा से यह राज्य सभा निवेदन करती है, अपनी पक्की राय का इजहार करती है कि इस सदन की राय के अनुसार अंग्रेजी लादने का काला विधेयक, निरंतर काल के लिए, जो लोक सभा में कल आने वाला है, उसे वापस लिया जाय। वरना श्रीमन आप देखोगे देश के कोने कोने से लोगों का चलना हो सकता है, हजारों की तादाद में कल लोग वहां पहुचेंगे। अगर राज्य सभा के लोगों की भावना आज व्यक्त हो जायगी तो लोग आयेंगे नहीं, अपनी जगहा पर रुक जायेंगे जब उनको मालूम होगा लोक सभा का विधेयक वहां कल बहस में नहीं आयेगा इसलिए आज ही उपयुक्त समय है और दूसरी छोटी मोटी बाते है, दूसरे चला करते हैं। अगर वह रूटीन आज हो जाएगा तो क्या बिगड़ जायेगा। मगर अगर इस काले बिल के विरोध में यह सदन अपने जजबे का इजहार कर पायेगा, तो इससे राष्ट्र की क्षति होगी।

MR. CHAIRMAN : You have stated your point of view.

SHRI MULKA GOVINDA REDDY (Mysore) : Mr. Chairman, the question of language is a very important question which concerns all of us. Mr. Rajnarain holds one view and some of us hold a different view. When that question comes here, he is free to oppose the Official Language Bill with all his might. But this is not the way he should do it.

MR. CHAIRMAN : Mr. Ganga Sharan Sinha to make a statement.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, क्या वह हमारे विषय पर कहेंगे। क्या मैं, गंगा बाबू, आप से निवेदन करूं कि आप तो अंग्रेजी हटाने वालों में हैं।

SHRI BHUPESH GUPTA : The point is : Must we settle the Hindi question today?

MR. CHAIRMAN : No, the Hindi question cannot come up to-day. There is no question about that. If you want to give a motion, you can send it.

श्री राजनारायण : क्वेश्चन हिन्दी नहीं है, क्वेश्चन अंग्रेजी हटाओ है . . .

SHRI BHUPESH GUPTA : All right, but we cannot *'hatao'* English before lunch.

श्री राजनारायण : देश की भाषाओं को बैठाओ, कन्नड बैठाओ, तामिल बैठाओ, मलयालम बैठाओ, बंगला बैठाओ, हिंदी बैठाओ, मगर अंग्रेजी को हटाओ।

MR. CHAIRMAN : You are taking too much of the time of the House. Will you please sit down?

(*Interruption*)

श्री राजनारायण : हम लोक सभा से कहेंगे कि महात्मा गांधी, राजेन्द्र बाबू और पंडित मदनमोहन मालवीय की आत्माओं का अनादर नहीं होने देंगे .

MR. CHAIRMAN : You are going against the discipline of the House. You are a senior Member. You please sit down. We have had sufficient discussion over this matter. We have heard your view on the matter. But under no circumstances can this matter be discussed today. Now I want Mr. Ganga Sharan Sinha to make a statement.

श्री राजनारायण : पहले आज इस पर बहस होनी चाहिये। आज अगर इस पर बहस नहीं होगी तो हम देश के साथ गद्दारी करेंगे, जनता के साथ धोखा करेंगे। कल लोक सभा में विधेयक आने वाला है, तो अगर राज्य सभा में बहस नहीं होगी . . .

(*Interruptions*)

SHRI M. GOVINDA REDDY : Sir, you ask him to withdraw from the House.

श्री राजनारायण : आज ही हमारे प्रस्ताव पर बहस होनी चाहिये कि लोक सभा में बहस के लिए कल जो संशोधन विधेयक बिल आने वाला है, वह पेश नहीं होना चाहिये।

MR. CHAIRMAN : No, Mr. Rajnarain, please sit down.

SHRI B. K. P. SINHA (Bihar) : Sir, I rise on a point of order. My sentiments are on the side of Mr. Rajnarain, but my reason is against him. He is suggesting a procedure which has no place in the Rules of Procedure of this House. He is practically suggesting that the business of the House be adjourned and a particular matter be taken up. Now while this procedure is a proper procedure in the Lok Sabha, our rules fully and completely rule out any such procedure. Therefore, I will repeat that while my motions are on his side, my reason is against him and I will appeal to the hon. Member not to press it...

(*Interruption*)

SHRI BHUPESH GUPTA : I will appeal to my colleague, Mr. Rajnarain, not to press it here at this moment. He can consult others.

And we have our own views of approach on the matter. I think it is advisable to defer it for the time being so that we can consult. At least, you consult the Opposition. Mr. Rajnarain is my dear friend and if you cannot carry him, how are you going to carry Mrs. Indira Gandhi? So listen to him on this matter.

(*Interruptions*)

श्री राजनारायण : श्रीमन्, मैं सिंहा जी की भावना का बहुत ही आदर करता हूं क्योंकि सिंहा जी ने कहा कि हमारे रूल्स में नहीं है, तो मैं आपके जरिये रिक्वेस्ट करूंगा कि रूल्स में पढ़े, उसमें लिखा है कि रूल्स को सस्पेंड किया जा सकता है। यह प्रस्ताव विदाउट नोटिस आता है। तो विदाउट नोटिस यह प्रस्ताव दे रहा हूं कि रूल्स सस्पेंड कर दिये जाये और आज इस पर बहस हो। मैं भूपेश गुप्ता जी की बात मानता हूं, ये तो हमारे मित्र हैं, ये हमारे साथ जूझने वाले हैं, उनको हम कैसे रंजीदा कर सकते हैं। मगर क्या उनसे आज मैं निवेदन करूं कि बंगाल के बारे में वह भी जानते हैं और हम भी जानते हैं। हमारे काशी में एक बंगाली टोला है। बंगाल की जनता आज बंगला भाषा को आगे बढ़ाने के लिए अंग्रेज़ी को हटाना चाहती है। इसलिए मैं श्री भूपेश गुप्ता जी से कहना चाहता हूं कि आज इस सवाल पर बहस हो। लोग अपनी भावनाओं को व्यक्त करें ताकि कल लोकसभा में यह काला विधेयक प्रस्तुत न हो पाये। इसलिये मैं आपसे...

(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : Please sit down. Mr. Rajnarain Mr. Ganga Sharan Sinha to make a statement. (*Interruption*) No more. If you were to go against all the rules and conventions, if you were to go against all the views of the House, I fear you have to withdraw from the House. I am sorry to say that. I do not like it, but I shall have to request you to withdraw.

श्री राजनारायण : मैंने कह दिया है दुःख के साथ और अदब के साथ, देश की तरक्की के लिए, देश की जनताओं की भावनाओं की कद्र करने के लिए। आज आप हमारी बातों को नहीं मान रहे हैं इसके लिए आप के प्रति आदर व्यक्त करते हुए भी आपके आदेश का उल्लंघन करना पड़ेगा। जिस तरह से बंगाल में लोग पीटे जा रहे हैं, जिस तरह से बिहार में लोग पीटे जा रहे हैं, और जिस तरह से उत्तर प्रदेश में लोग पीटे जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश में तो प्रोफेसरों पर डंडा चलाया गया है, उस हालत में अगर आप चाहते हैं बलपूर्वक इस सदन से हमको हटा दें, तो स्वागत है। आप का यह आदेश देश के विरूद्ध होगा, जनहित के विरूद्ध होगा। देश की तरक्की को रोकने वाला होगा, राष्ट्र की सीमाओं की सुरक्षा पर खतरा डालने वाला होगा। इसलिये देश के प्रति आदर प्रकट करते हुए श्रद्धा व्यक्त करते हुए आपके आदेश का नम्रता पूर्वक उल्लंघन करता हूं। मैं चाहता हूं कि आज चेयर के आदेशों का उल्लंघन करना देश के हित में है, यह हमारा धर्म है और तात्कालिक धर्म है। चेयर का जो आदेश है वह राष्ट्रीय भावनाओं की उपेक्षा करती है।

MR. CHAIRMAN : I have nothing more to say. We are repeating the same thing over and over again. I wish

[Mr. Chairman]

Mr. Rajnarain would not insist on making this kind of request at all and I do want Mr. Rajnarain to sit down. Now Mr. Ganga Sharan Sinha to make a statement.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, चूंकि आप खड़े है . . . (*Interruptions*) देखिये, जनता की इच्छा का आदर होना चाहिए। इसलिये जो प्रस्ताव मैं प्रस्तुत कर रहा हू उस पर पहले बहस होनी चाहिये। यह सारे देश का सवाल है, देश की तरक्की का देश की सुरक्षा का सवाल है, जनता के पेट का सवाल है, और गुलामी के चिन्हों को हटाने का सवाल है।

SHRI BHUPESH GUPTA : Sir, as you know very well, the rule is not in his tavour. You have counselled him. I think many in the Opposition would also share your opinion that let this matter not be pursued in this matter. Certainly I would not like Mr. Rajnarain to be named, much less to be thrown out, nor would I like a situation of this kind to be created over a matter like this.

SHRI RAJNARAIN : Let the house be suspended for half an hour.

(*Interruptions*)

SHRI BHUPESH GUPTA : Sir, generally it is not customary with me to set up and say something through you to another member of the Opposition but Mr. Rajnarain is engraved in our heart and he is very dear to us. Therefore with great pain and agony I have to get up to make an appeal to him. Mr. Rajnarain should realise that over this matter there is in principle agreement between him and as in the sense that the changeover, should take place and English should be replaced by the regional languages. We are all for it. The difference may be as to how it should be done and in what manner it should be done. Therefore, Mr. Chairman, we have to take into account very many factors into consideration including those people who may not exactly see eye to eye with us. He referred to Bengal. I say there are many people in Bengal. They love their language but at the same time they think that transition shall take place in a proper way on an even keel. That is why I say, Mr. Rajnarain, over this matter you should not do anything which will compromise your position. You have a noble cause to uphold, why do you spoil your case. I am with you and we are with you. Take us also along with you. After all leadership does not mean that you should run away leaving others behind. Leadership means that you should carry us also with you. Therefore we must keep our heads cool over this matter and we must not allow our patience to exhaust. In the matter of Governors we did not do this, when democracy was murdered, we did not do such a thing. Here also we do not want to do any such thing. Therefore, Mr. Rajnarain, we are appealing to you as your colleagues that over this matter there is scope for debate and discussion as to how the changeover should be brought about. Let that door not be closed and let us discuss it. I think the Chairman is very sympathetic as far as the language question is concerned. Let us not do anything whereby the door for such a discussion may be closed. After all, over the language question you may be thrown out or I may be thrown out and we may look very heroic but would that convince the people in the South or in Bengal or in other parts of the country who do not see eye to eye with us? They will say, "Look, Mr. Bhupesh Gupta and Mr. Rajnarain who uphold a just cause do not know how to fight for a just cause". If similar situations are created in the Tamilnad Assembly and other places, would it help the cause of the language as we want to serve it or as we are bound by the Constitution to serve it? Therefore, Sir, from the bottom of my heart I appeal to Mr. Rajnarain and others to keep their heads cool. I respect them and I love them; also I hold them dear to my heart. Let us settle the language question with mutual accord and understanding and only thus can we solve the problem that is before us.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, मैं आपके जरिये एक निवेदन करूंगा। आप इस बात के सबसे बड़े साक्षी हैं और इस बात को श्रीमती इन्दिरा नेहरू गांधी जी नहीं जानती होंगी। जब आप हमारे यहां राज्यपाल थे और दोनों सदनों को सम्बोधन करने के लिए आये थे, तब हमने आप से करबद्ध निवेदन किया था कि आप अंग्रेजी में न बोलें। अगर आप हिन्दी नहीं बोल सकते हो, तो

आप तेलगू में बोलें। आपने कहा था कि तेलगू में हमारा भाषण कैसे तैयार होगा। तब हमने कहा कि हमारे लखनऊ विश्व-विद्यालय में अनेक तेलगू जानने वाले छात्र हैं और आप अपने भाषण का अनुवाद उनसे करवा लें। यह बात आपको अवश्य याद होगी। इसलिए मैं अपने सम्मानित सदस्य श्री भूपेश गुप्त जी को यह बतलाना चाहता हूं कि तैलगू की जनता ने, तैलगू भाषाभाषी लोगों ने इस संबंध में हमारे पास अनेक धन्यवाद के पत्र भेजे कि उत्तर प्रदेश के आदरणीय सदन में तैलगू की मांग की गई। इसलिए मैं श्री भूपेश गुप्त जी से निवेदन करूंगा कि आप बंगाली की मांग करें और तामिल वाले तामिल की मांग करें। हमारे मित्र श्री मुल्का गोविन्द रेड्डी-जी बंगलोर से आते हैं और बंगलोर कार-पोरेशन में तीन सदस्यों की समिति ने सर्व-सम्मति से एक रिपोर्ट पेश की कि अंग्रेजी को फौरन हटा दिया जाय। अंग्रेज़ी साइन बोर्डों को हटा दिया जाय और उसकी जगह पर कन्नड़ में लिखा जाय और नीचे हिन्दी में लिखा जाय। इस रिपोर्ट को केन्द्रीय सरकार ने प्रकाशित नहीं होने दिया और केन्द्रीय सरकार ने इसको दबा दिया। यह रिपोर्ट साक्षी है और जो मित्र वहां से आते हैं वे भी साक्षी हैं। मैं हाल में मद्रास गया था और मैंने पाया कि वहां की सारी जनता अंग्रेज़ी को हटाना चाहती है। तामिल रस्सु कड़गम के नेता श्री शिवज्ञान ग्रामणी ने राजगोपालाचार्य जी के बारे में कहा कि वे तो अंग्रेज़ी के मानसपुत्र हैं। तो ऐसी स्थिति पर हम कौनसी बात कर रहे है जिसमें श्री भूपेश गुप्त को दिक्कत है। मैं हिन्दी लादने की बात नहीं कह रहा हूं, मैं अंग्रेज़ी हटाने की बात कह रहा हूं। हमारा आन्दोलन अंग्रेज़ी हटाने के लिए है और देशी भाषाओं को चलाने के लिए है। हम हिन्दी लादने की बात नहीं कह रहे हैं। प्रधान मंत्री जी कहें कि वे क्या चाहती है। मैं आपके जरिये प्रधान मंत्री जी से चाहूंगा और हम अपेक्षा

करते हैं कि वे क्या चाहती हैं। सदन में इतना बड़ा सवाल उठा है और प्रधान मंत्री जी बैठी हुई हैं और वे बोलती क्यों नहीं है। वे प्रधान मंत्री हैं . . .

(*Interruptions*)

श्री अबिद अली (महाराष्ट्र) : श्री राजनारायण जी जितनी बातें कह रहे हैं, तो मैं यह पूछना चाहता हूं कि बिहार और यू० पी० में जो कुछ हो रहा है वह उनकी ही सरकार वहां पर डंडा चला रही है और उसी को छिपाने के लिए वे यहां पर इस तरह की बात कर रहेहैं। इस तरह की चीज़ को आप कबतक चलने देंगे ?

श्री राजनारायण : उसी सरकार की आज्ञा का हमने उल्लंघन किया है और 144 धारा को तोड़ा और जिसकी वजह से वहां की सरकार को धारा 144 को वापस लेना पड़ा। आबिद अली जी . . .

(*Interruptions*)

श्री अबिद अली : यू० पी० सरकार और बिहार की सरकार डंडा क्यों चला रही है, यह बतलाइये ?

DR. ANUP SINGH (Punjab) : Mr. Chairman, Sir, I think it shall be quite clear by now that Mr. Rajnarain, a very senior Member, is absolutely...

(*Interruptions*)

श्री राजनारायण : श्री ए० डी० मणि जी के मुंह से जब अंग्रेज़ी निकलती है तब हम ज्यूनियर और सिनियर का कोई ख्याल नहीं करते हैं।

(*Interruption*)

DR. ANUP SINGH : I take back the word 'senior'. He is a very articulate and very vocal Member of this House. It is very clear by now that Mr. Rajnarain is determined to hold this House to ransom. In spite of your repeated requests, he has tried to monopolise the time of the House. I really cannot see what exactly we are discussing. (*Interruption*) When you were speaking, I never got up. Sir, he seems to be very solicitous about the unity of this country. He seems to be solicitous about the unity of this country, which

[Dr. Anup Singh]
we all are for. But he reminds me of a bride who, on the day of the wedding, turned to the bridegroom and said, "Darling, from today you and I are one, but don't forget that I am one". He wants Hindi on his own terms, which will disrupt the very basis of unity in this country.

श्री राजनारायण : अंग्रेजी हटाने वाले युनिटी चाहते हैं और अंग्रेजी को कायम रखने वाले डिसयुनिटी चाहते हैं।

(*Interruption*)

प्रधान मंत्री (श्रीमती इंदिरा गांधी) : श्रीमन्, मैं पहले बोलती, लेकिन जैसा कि कई माननीय सदस्यों ने कहा है ऐसे डिबेट के लिये यह मौका नहीं है। मैं अपने विचार प्रगट कर चुकी हूं इस सदन में भी और दूसरे मौकों पर भी। आपने देखा कि इस समय भी यह सदन एक राय का नहीं है। इसमें कांग्रेस के सदस्य या दूसरे दलों का कोई मतभेद नहीं है। एक दूसरी ही चीज बीच में आई है और जैसा कि श्री भूपेश गुप्त ने कहा, वह बहुत ठीक उन्होंने कहा और अभी माननीय सदस्य अनूप सिंह जी ने जो कहा . . .

श्री राजनारायण : बिल्कुल गलत कहा।

श्रीमती इन्दिरा गांधी :. . . वह भी विचार करने योग्य है।

आज भी हमारे देश में हमारे भाई बहन, एक प्रांत के नहीं कई प्रांतों के हैं, जिन के मन में किसी भी कारण से, हमारी गलती हो या किसी की गलती हो, एक शंका पैदा हो गई है और उनको लगता है कि उनके ऊपर हम कुछ थोपने जा रहे है। इस शंका को हमें दूर करना चाहिये। अगर हम देश की एकता चाहते हैं, तो जैसा कि भूपेश जी ने यहां पर कहा हम को देखना है कि कैसे हम देश के सब प्रांतों के लोगों को अपने साथ ले जा सकते हैं।

जहां तक हिन्दी का प्रश्न है, हम सब राजनारायण जी से सहमत है। हम यह मानते हैं कि हिन्दी को बढ़ाना है और जो देश की दूसरी राज्य भाषाएं हैं उनको भी वही महत्व देना है और उनको भी बढ़ाना है क्योंकि केवल अपनी मातृभाषा में कोई भी जनता ठीक तरह से विचार कर सकती है और अपने विचारों को प्रकट कर सकती है। इस लिये देश की उन्नति के लिये यह आवश्यक है कि मातृभाषा को बढाया जाय और इसमें बिल्कुल कोई मतभेद किसी के मन में नहीं है, चाहे वे दक्षिण के लोग हों, चाहे वे बंगाल के लोग हों, चाहे कहीं के लोग हों। कुछ मतभेद है, तो जैसा भूपेश जी ने कहा कि किस तरह से यह किया जाय, इसमें मतभेद है। लेकिन अगर यह बहस इस तरह से हो कि आपस में फूट पड़े, तो इससे न हिन्दी बढ़ने वाली है और न दूसरी भाषाएं बढ़ने वाली हैं।

इस वक्त एक मांग हुई है। दूसरे सदन में जो हो रहा है उसकी राजनारायण जी को बहुत फिक्र है। दूसरे सदन में चाहे जो हो, वहां भी जो सदस्य हैं वे चुन कर के आये हैं, वे भी इनके प्रांत से और बिहार से चुन के आये हैं, मद्रास से आंध्र प्रदेश से चुन कर के आये हैं, सब जगह से चुन कर के आये हैं, वे अपनी राय वहां पर जरूर प्रगट करेंगे और अगर उनकी कुछ दूसरी राय होगी, तो मालूम हो जायगी। लेकिन जहां तक यहां के लोगों की राय है, उस पर जरूर विचार किया जा सकता है।

जो इनका कालिंग अटेंशन था और जिस की ओर आपने हमारा ध्यान दिलाया था, वह खास तौर से बनारस विश्वविद्यालय का था . . .

श्री राजनारायण : माननीय, दिल्ली का भी था।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : उसके बारे में हमारे जो शिक्षा मंत्री हैं उन्होंने कहा था कि वे एक स्टेटमेंट देंगे। वे आज भी उसके बारे में बताने को तैयार हैं। लेकिन मैं माननीय सदस्यों से इस वक्त यह प्रार्थना करूंगी कि जैसा भूपेश जी ने कहा कि इस

समय हमे ऐसा कुछ नही करना चाहिये जिस से देश के बीच में जो थोड़ी सी गलतफहमी पैदा हुई है वह और बढ़ जाय और न हमे उत्तर प्रदेश और बिहार में उसको बढ़ाना चाहिये। वहां पर जो आन्दोलन हो रहा है वह मेरी समझ में नही आ रहा है कि क्यों हो रहा है। वे दोनों प्रांत हिन्दी को बढ़ा रहे हैं और चला रहे हैं।

एक बात और मै आपसे कहूं कि ऐसे हम नही चाहते है कि हिन्दी थोपी जाय किसी पर बिना उसकी रजामन्दी के, उसी तरह हम अंग्रेजी को भी किसी पर थोपना नही चाहते। लेकिन अग्रेजी एक कड़ी रही है और अब हम उस कड़ी को जरा बदलना चाहते है। यानी हम चाहते है कि राष्ट्र कड़ी जो हो वह हिन्दी या हिन्दोस्थानी हो। हम अंग्रेजी को भी रखना चाहते हैं इसलिए कि अंतराष्ट्रीय कड़ी जो हो, जो दूसरे देशों से हमें बातचीत करनी हो या अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और सभाओं में जो बात करनी हो, उसके अंग्रेजी से हमें जरूर सुविधा होती है। इस लिये हम चाहते थे कि तीसरी भाषा को यहां पर रखा जाय जिस से एक अंतर्राष्ट्रीय कड़ी बनी रहे। लेकिन मै यह स्पष्ट रूप से कहना चाहती हूं कि किसी के मन में यह बात नहीं है कि हिन्दी की जगह अग्रेजी ले ले या दूसरी जो हमारी राज्य भाषाएं है उनकी जगह ले ले। कोई इसको नही चाहता है। हम केवल यह चाहते है कि हिन्दी को बढ़ाये और किस तरह से बढ़ाये इसके लिये ठीक रास्ता ढूढे। वे जो दूसरे प्रदेश है जिन की इस समय यह माग है कि उनको थोड़ा और समय दिया जाय, उनकी रजामन्दी से यह हो सकता है। केवल यह प्रश्न है और इसको बहुत सफाई के साथ श्री भूपेश गुप्त ने रखा और मुझे आशा यही है कि सारा सदन इस बात को मानेगा कि ऐसे गंभीर प्रश्न में हम यहां पर मतभेद न पैदा करे। हम अलग से बैठ कर के और जो अपोजीशन के सदस्य है वे सब मिल कर के कोई रास्ता निकाल सकते हैं। हमारे सदस्य भी साथ मिल कर के बैठ सकते है। आप चाहे, तो जो अलग अलग दल हैं उनके नेताओं को आप अपने कमरे में बुला सकते है और उनसे बातचीत हो जाय। लेकिन जिस तरह से यह सदन में हो रहा है मै बहुत अदब के साथ कहूंगी कि यह शोभा की बात नही है।

श्री राजनारायण : मैं आपके जरिये श्रीमन्, एक निवेदन करना...

SHRI N. SRI RAMA REDDY (Andhra Pradesh) : Mr. Chairman, Sir, you should not allow him to speak any more.

SHRI M. M. DHARIA : No more from him, Sir.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, मै आपके जरिये प्राइम मिनिस्टर से एक निवेदन करना चाहता हूं।

MR. CHAIRMAN : After the Prime Minister's appeal he wants to respond. Please allow him to have his say.

SHRI N. SRI RAMA REDDY : There is no motion on the subject, Sir. It is your generosity that he is exploiting, Sir.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, आप अपनी व्यवस्था को इनकी हुल्लड़बाजी से न बदलें। आपने सही कहा है कि प्राइम मिनिस्टर को सुनने के बाद मै रेसपांड करना चाहता हूं। मै प्राइम मिनिस्टर साहेबा से बहुत अदब के साथ एक अपील कर रहा हू...

SHRI ABID ALI : He is never obeying the Chair and now he should be suspended from this House for the whole session.

SHRI N. SRI RAMA REDDY : We are not prepared to listen to him any more. His speech is now irrelevant. There is no motion before the House.

SHRI ABID ALI : I have already moved a proposition that Mr. Rajnarain, since he is not obeying you, should be suspended from the House for the whole of this session.

MR. CHAIRMAN : The Prime Minister has made her position quite clear to everyone. Now Mr. Rajnarain

[Mr. Chairman]

would like to make a submission, and if he makes the submission, there is nothing wrong in it.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, मैं आपके ज़रिये प्राइम मिनिस्टर साहेबा की इस भावना की कद्र करता हूं जिस के ज़रिये उन्होंने लोकमत के आदर करने की बात कही है। तो लोकमत के आदर के लिये ही क्या प्राइम मिनिस्टर साहेबा इस समय इसको उचित नहीं समझेंगी कि जो विधेयक है उसको लोकमत की सम्मति प्राप्त करने के लिये वितरित कर दिया जाय, सर्कुलेट कर दिया जाय। इस समय उसको लोक सभा में बहस के लिये न रखा जाय, अगर वे इस प्रस्ताव को कर दें, तो हम तैयार हो जायगे। वे बता दें कि लोकमत की भावना जानने के लिये इस समय यह विधेयक वितरित किया जायगा।

दूसरी बात यह है कि मैं समझता हूं कि प्राइम मिनिस्टर साहेबा को भी चोट पहुंची है। हम हिन्दी की बात नहीं कर रहे हैं। हिन्दी प्राइम मिनिस्टर चाहती हैं, उसके लिये शुक्रिया है। हम इस समय केवल यह कह रहे हैं कि अंग्रेज़ी हटाओ। सब भाषाएं अपनी जगह ले लेंगी। हिन्दी में क्षमता होगी, ताकत होगी, शक्ति होगी, तो वह अपनी जगह ले लेगी। इसी तरह बंगला में ताकत होगी, तमिल में होगी, उडिया में होगी, कन्नड़ में होगी, उर्दू में होगी, तो वे सब अपनी अपनी जगहें ले लेंगी। इस देश की भाषाओं को आपस में लड़ा कर के मुल्क को खंडित करने की कोशिश न प्राइम मिनिस्टर साहेबा करें और न डा० अनूप सिंह जी करें।

तो कांग्रेस के पार्लियामेंट के मेम्बरों के लिए व्हिप क्यों ? (*Interruptions*) यह पार्टी क्वेश्चन नहीं है, यह राष्ट्र का सवाल है। जहां प्रधान मंत्री ने कहा कि लोग अपनी भावनाओं का इज़हार करेंगे, तो व्हिपिंग नहीं होनी चाहिए, मगर प्रधान मंत्री साहिबा उसको करेंगी। वह व्हिपिंग न की जाय, तो हम देखेंगे कि मेम्बरों ने अपनी राय का इज़हार अज़ादी के साथ किया है, मगर व्हिप करके, दबा कर घर मंत्री डंड के जोर पर, पदों के लालच से उस काले विधेयक को पास कराना चाहते हैं इसलिए हमारा और विरोध है। हम भूपेश जी की बात मानने के लिए तैयार हैं। आप सदन की कार्यवाही बन्द कर दें। प्रधान मंत्री के यहां चलने के लिए हम तैयार हैं, वे चलें, गंगा बाबू चलें। हम झगड़ा नहीं चाहते, हम देश में आपस में कोई वितंडवाद नहीं चाहते। हम चाहते हैं कि हमारी आदरणीय प्राइम मिनिस्टर बुद्धि-विभ्रम-जन्य भ्रान्ति में विचरण न करें। और चाहूंगा कि श्री अनूप सिंह भी बुद्धि विभ्रम के शिकार न हों। क्या गांधी जी के नेतृत्व में हमने अंग्रेज़ों के विरूद्ध इसीलिए संघर्ष किया था ? न मालूम कितने मासूम बच्चे संगीनों की नोक पर क्या इसलिए चढ़े थे, न मालूम कितनी बहिनों की मांग का सिन्दूर क्या इसीलिए घुला था कि अंग्रेज़ों के जाने के बाद भी अंग्रेज़ी रहेगी ? अंग्रेज़ों के जाने के बाद एक मिनिट भी अंग्रेज़ी का यहां रहना म० गांधी की आत्मा के साथ अन्याय होगा। मैं आपके जरिए प्रधान मंत्री से जानना चाहता हूं कि क्या लोकमत को जानने के लिए इस विधेयक को वितरित करेंगी। हम भुपेश गुप्त की राय से सहमत हैं कि हम प्रधान मंत्री से मिल लें।

श्री चन्द्र शखर (उत्तर प्रदेश) : सभापति महोदय, मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता हूं और सदन के समक्ष यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि प्रधान मंत्री ने स्पष्ट किया है कि देश की, राष्ट्र की और सरकार की नीति भाषा के सम्बन्ध में क्या है।

हमारे मित्र माननीय राजनारायण जी ने कांग्रेस पक्ष के बारे में बड़ी चिन्ता व्यक्त की है। मैं उनसे कहना चाहूंगा कि कांग्रेस पक्ष में भी लोग समझते हैं कि उनका उत्तरदायित्व क्या है, वे यही नहीं समझते कि भाषा के प्रश्न पर उनका उत्तरदायित्व क्या है, वे यह भी समझते हैं कि राष्ट्रीय

उत्तरदायित्व क्या है । साथ ही वे यह भी समझते है कि संसदीय जनतंत्र को चलाने के लिए इस सदन के प्रति हमारा उत्तरदायित्व क्या है।

श्री राजनारायण : जसे बंगाल में चला रहे हो ।

श्री चन्द्र शेखर : इसके साथ ही हम यह भी समझते हैं कि जिस जनता का प्रतिनिधित्व हम करते हैं और जिसका आदेश लेकर इस सदन में आए है उसकी भावनाएं क्या है । मै ऐसा नही मानता कि इस देश की जनता किसीभी प्रान्त में, चाहे उत्तर प्रदेश में या मध्य प्रदेश में या बिहार में यह चाहती है कि संसदीय जनतंत्र की सारी मर्यादाओं को तोड़ दिया जाय और उसके पक्ष में यह भावना फैलाने की व्याप्त करने का प्रयास किया जाय कि यह सब कुछ हिन्दी के पक्ष में हो रहा है जो कुछ माननीय राजनारायण जी ने किया है। मै कवल यह कहना चाहता हूं कि यह हिन्दी वाले और हिन्दी बोलने वाले लोगो की भावना नही है कि जनतत्र की मर्यादाओं का उल्लंघन किया जाय एक भाषा के सवाल को लेकर । भाषा का सवाल एक अलग सवाल है, उस सम्बन्ध मे जो हमार विचार है उनको हम रखेगे ।

श्री राजनारायण : भाषा का सवाल रोटी का सवाल है, भाषा का सवाल सुरक्षा का सवाल है।

श्री चन्द्र शेखर : भाषा का सवाल सुरक्षा का सवाल है, भापा का सवाल राष्ट्रीय गौरव का सवाल है, भाषा का सवाल देश की एकता का सवाल है, भाषा का सवाल राष्ट्र की मान-मर्यादा और राष्ट्र के गौरव का सवाल है और मे अपने माननीय मित्र राजनारायण जी से कहना चाहता हूं कि उनसे ज्यादा सजग भाषा के प्रश्न पर कांग्रेस पक्ष के लोग हैं और उन्होंने एक बार नहीं दस बार इस पर विचार किया है और . . .

श्री राजनारायण : विचार तो कांग्रेस ने 20 साल तक किया है।

श्री चन्द्र शेखर : शिक्षा मंत्रालय ने भाषा नीति स्पष्ट की है । प्रधान मंत्री ने अभी अपने वक्तव्य में कहा है कि सरकार भाषा के विवाद का किस तरह से समाधान करना चाहती है । मै माननीय राजनारायण जी से यह भी कहना चाहता हूं कि जितना गुस्सा, जितना आक्रोश उन्होंने दिखाया इलाहाबाद के लिए, लखनऊ के लिए, आगरा के लिए, कानपुर के लिए और बनारस के लिए, वह कांग्रेस ने नहीं किया है, उस मंत्रिमंडल ने किया है जिसके वे भागी है, अंशदार हैं, हिस्सेदार है । उन्होंने कहा कि में नहीं सहन कर सकता अगर कानपुर में गोली-लाठी चले, लखनऊ में लाठी चले । अगर उनका दिल फटा जा रहा था, तो अच्छा होता कि अपनी भावनाओं का प्रगटीकरण वे लखनऊ में जाकर करते और जाकर चौधरी चरण सिह और अपने मित्र प्रभु नारायण सिह को कहते कि कुर्सियों स नीच उतरों, हमारा दिल फटा जा रहा है विद्यार्थियों के लिए । जो लोग गोली चला रहे है, लाठियां चला रहे ह, उनके नाम पर जनता का नेतृत्व करने का अहंकार केवल माननीय राजनारायण जी जैसे सदस्य कर सकते हे जिन्हे एक केमोफ्लेज चाहिए, एक ट्रोजन हार्स चाहिए । मै दु:ख के साथ कहना चाहता हूं कि जो कुछ राजनारायण जी कह रहे हे उससे हिन्दी का कोई लाभ नही हो रहा है, इससे हिन्दी के प्रति दूसरे प्रदेशों में विद्वष फैलता है ।

श्री राजनारायण : अंग्रेज़ी हटाओ ।

श्री चन्द्र शेखर : मे कहना चाहता हूं राजनारायण जी मे कि . . .

श्री राजनारायण : आप अंग्रेज़ी के भक्त है।

श्री चन्द्र शेखर : विधेयक में लिखा हुआ है कि जो प्रदेश हिन्दी में लिखना चाहेगा उसके लिए कोई बन्धन नही होगा ।

SHRI NIREN GHOSH : No, no. All the 14 languages should be made official link languages. Otherwise there will be no unity. No. one language should have that position.

श्री चन्द्र शेखर : मैं, श्रीमन्, यही स्पष्ट करना चाहता हूं कि यह भाषा का प्रश्न नहीं है। एक ओर श्री राजनारायण जी इस सवाल को लेकर राष्ट्रीयता को खंडित करना चाहते हैं हिन्दी के नाम पर, दूसरी तरफ हमारे नीरेन घोष उन दूसरी विध्वंसक शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो भाषा के प्रश्न पर देश की एकता को बनाए नहीं रखना चाहतीं। यह सवाल नहीं है कि कौन भाषा प्रस्थापित हो। यह दुर्भाग्य है कि इस देश में सैकड़ों वर्षों तक अंग्रेजों की हुकूमत रही और अंग्रेज़ी के माध्यम से काम होता रहा। आज अंग्रेज़ी को हटा कर उसकी जगह पर एक राष्ट्रीय भाषा को प्रस्थापित करना है। माननीय भूपेश गुप्त ने कहा . .

SHRI NIREN GHOSH : No, no single language, but all the 14 languages. Either all of them or none at all.

श्री चन्द्र शेखर : जैसा माननीय भूपेश गुप्त ने कहा, इस विकास-क्रम को शांतिमय तरीके से, सौहार्द के जरिए पूरा करना है।

माननीय राजनारायण जी कभी कभी समझ की कमी से कुछ ऐसा कर जाते हैं जो वे नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं। मैं उनसे निवेदन करूंगा कि अगर सचमुच उनको हिन्दी से प्रेम है और अंग्रज़ी हटाना चाहते हैं तो उसके लिए यह स्थान नहीं है, इसके लिए उनको दक्षिण के प्रदेशों में जाना चाहिए। मैं माननीय राजनारायण जी के साथ चलने के लिए तैयार हूं, कांग्रेस पार्टी उनके साथ सहयोग करने के लिए तैयार है लेकिन राजनारायण जी कोई रचनात्मक पहलू रखें, यह प्रयास करें कि देश के दूसरे हिस्सों में जहां हिन्दी नहीं बोली जाती है उन लोगों की सद्भावना, उन लोगों का सहयोग, उन लोगों का सहकार हिन्दी भाषा के साथ हो। इसलिए, सभापति महोदय, मैं आपसे यही निवेदन करना चाहता हूं और आपके जरिए माननीय राजनारायण जी से भी, जो हमारे बहुत पुराने मित्र हैं, निवेदन करना चाहता हूं कि . . .

श्री राजनारायण : उम्र में भी हम छोटे हैं।

श्री चन्द्र शेखर : आप इतना विश्वास रखें कि कांग्रेस पार्टी अपने राष्ट्रीय कर्तव्य का निर्वाह करेगी, इस सम्बन्ध में उनको चिन्तित होने की जरूरत नहीं है। कांग्रेस पक्ष किस तरह से अपना कार्य करे इस बारे में उन्होंने सलाह दी। उनके दल का कोई काम नहीं है, इसलिए कांग्रेस पक्ष के बारे में उन्होंने सलाह दी, मैं उनका बड़ा आभारी हूं, लेकिन वे यह विश्वास रखें कि कांग्रेस पक्ष अपने कर्तव्यों के बारे में सजग है।

अन्त में, अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय राजनारायण जी से निवेदन करूंगा, विरोध पक्ष के सभी नेताओं ने भी उनसे अनुरोध और आग्रह किया है . . .

SHRI BHUPESH GUPTA : It is one o'clock, Sir. Please adjourn the House. We are hungry.

MR. CHAIRMAN : I think we have had enough of this discussion.

श्री चन्द्र शेखर : उस आग्रह को मान कर इस विवाद को समाप्त करें और देश में ऐसा वातावरण बनाएं जिससे हिन्दी के प्रति सद्भावना हो।

श्री राजनारायण : श्रीमन्, एक निवेदन हमारा है। यही कांग्रेस वाले शिखंडी की तरह जब दक्षिण में जाते हैं तो कहते हैं कि हिन्दी लादी जा रही है और जब उत्तर भारत में आते हैं तो कहते हैं कि दक्षिण टूट रहा है। एक मुंह से दो बातें। न दक्षिण टूटेगा, न हिन्दी लदेगी, अंग्रेज़ी हटने के बाद सभी मातृभाषाओं की प्रतिष्ठा होगी श्रीमन। उत्तर भारत में यह कहे कि दक्षिण टूट रहा है और दक्षिण भारत में यह कहें कि हिन्दी लादी जा रही है। अंग्रेजी निश्चित रूप से हमारे देश के ऊपर कलंक है। इसलिये मेरा निवेदन है कि हम इसको कभी नहीं सहन करना चाहते है।

(Interruptions)

MR. CHAIRMAN : The House stands adjourned till 2.30 P. M.

The House then adjourned for lunch at one of the clock.

The House reassembled after lunch at half-past two of the clock, THE DEPUTY CHAIRMAN in the Chair.

THE DOCK WORKERS (REGULATION OF EMPLOYMENT) AMENDMENT BILL, 1967

THE DEPUTY CHAIRMAN : Mr. Hathi.

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : मुझको आपकी आज्ञा से कुछ निवेदन करना है । आपकी आज्ञा से मुझको कुछ निवेदन करना है ।

THE MINISTER OF LABOUR AND REHABILITATION (SHRI JAISUKHLAL HATHI) : Madam, I beg to move :

"That the Bill further to amend the Dock Workers (Regulation of Employment) Act, 1948, be taken into consideration."

श्री राजनारायण : माननीया मेरे लिये क्या आज्ञा हो रही है । आपकी आज्ञा से मैं कुछ निवेदन करने के लिये खड़ा हुआ हूं । जब चेयर उस समय सदन स्थगित कर के उठे तो मैं हाउस के पोजेशन में था ।

SHRI JAISUKHLAL HATHI : The parent legislation was enacted in 1948 mainly with a view to reducing the hardship suffered by dock workers due to the casual nature of their employment. The Act empowers Government to frame schemes for the registration of dock workers in order to ensure greater regularity of employment and for regulating the employment of dock workers whether registered or not.

We have so far framed schemes for the decasualisation of Stevedore labour in ports of Bombay, Calcutta, Madras, Cochin, etc. Each scheme is administered by a tripartite statutory body called Dock Labour Board.

Now this Bill, Madam, as the House will see has only three clauses. Clause 3 is the operative clause and is an important clause.

श्री राजनारायण : देखिये, नेता सदन बोले जा रहे हैं । माननीया, मैं प्वाइंट आफ आर्डर रेज़ करता हूं ।

उपसभापति : मैंने कहा कि इनको कर लेने दो । I will give you time.

श्री राजनारायण : दूसरा बिजनेस ले लिया है ।

SHRI JAISUKHLAL HATHI : Within five minutes I will finish.

Clause 2 enables us to make provision for welfare measures for the staff of the Dock Labour Boards. The Dock Labour Board is a tripartite body composed of workers, employers and the Government. We have provided for welfare measures for the dock labour but the question arose whether money could be utilised for the children of the staff of these Dock Labour Boards. That position is being made clear here to say that it can be done.

The other thing is this. Certain acts are made punishable under the Act but where there is a company difficulty arose whether a person acting on behalf of the company could be punished or not. Of course the other laws are there but this was not very clear. Therefore clause 3 makes the persons concerned liable for punishment. If there is a company which has committed the offence then every person who at the time when the offence was committed was in charge and was responsible to the company shall be deemed to be guilty of the offence and shall be liable to be proceeded against and punished. There is a proviso that if the person concerned is able to prove that he had no knowledge of the offence being committed or that he took all due steps to prevent the commission of the offence he shall not be punishable.

Therefore these two are the important clauses; one is that the benefit of welfare activities could be given to the employees of the Dock Labour Boards and secondly where the offence committed is by a company then the officers of the company acting on behalf of the company will also be liable for punishment.

Madam, I move that the Bill may be taken into consideration.

The question was proposed.

THE DEPUTY CHAIRMAN : Now, Mr. Rajnarain, do you want to say something on this Bill?